महाकवि दिङ्नाग कृत 'कुन्दमाला' का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन

*डॉ. बंशी धर रावत

शोध सारांश

संस्कृत समस्त लोक की प्राचीनतम भाषा है। भारतीय ऋषियों, मनीषियों एवं विद्वानों का समस्त चितंन, मनन, गवेषण और विश्लेषण संस्कृत भाषा में ही है। भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक जीवन की व्यवस्था भी इसी भाषा में प्राप्त होती है। यह ग्रीक, लेटिन, जर्मन, गोथिक इत्यादि अनेक भारोपीय परिवार की भाषा की जननी है।

संस्कृत साहित्य का विश्व वाङ्मय में अद्वितीय व गौरव पूर्ण स्थान है यह साहित्य भारतीय (संस्कृति) की अमूल्य निधि है व इस देश की संस्कृति का प्रधान वाहन रहा है संस्कृत के काव्य एवं नाटक भारतीय संस्कृति की क्रीड़ास्थली है। संस्कृत साहित्य अत्यधिक व्यापक व सर्वाङ्गपूर्ण है मानव के चार पुरूषार्थ है– धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष इन चारों पुरूषार्थों की सम्यक् विवेचना, से संस्कृत साहित्य का विशाल भण्डार भरा पड़ा है।

भारत के सभी धर्मग्रन्थ वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, स्मृति ग्रन्थ, दर्शन शास्त्र, महाकाव्य, काव्य, नाटक, गद्य–काव्य, गीति–काव्य, आख्यान साहित्य आदि संस्कृत में ही है।

नाटक का महत्त्व

संस्कृत के काव्यशास्त्रियों ने काव्य को दो भागों में विभक्त किया है–

1. दृश्य काव्य
2. श्रव्य काव्य

दृश्य श्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधामतम् ।
दृश्यं तत्राभिनेय तद्रूपारोपात्तु रूपकम्।। (साहित्य दर्पण 6:2)

श्रव्य काव्य के तीन भेद होतें हैः–

1. पद्य काव्य, 2. गद्य काव्य 3. चम्पु काव्य ।

दृश्य काव्य में रूपकों (नाटकों) तथा उपरूपकों का ग्रहण होता है क्योंकि इनका अभिनय किया जाता है। ये दर्शकों द्वारा देखे जाते हैं।

नाटकों में श्रव्य काव्यों की अपेक्षा हृदयग्राहिता, आकर्षकता भावाभिव्यञ्जकता, मनोरंजकता और विषय की विविधता अधिक होती है। काव्य की अपेक्षा नाटक की प्रतिष्ठा सदैव उच्च रही है। काव्य के आनन्द से वंचित रहने वाला व्यक्ति भी नाटक का सुन्दर अभिनय देख कर अत्यधिक आनन्दानुभूति करते है। काव्य श्रवण–मार्ग से हृदय को आकृष्ट करता है तथा अपना प्रभाव छोड़ता है, परन्तु नाटक चक्षुमार्ग से हृदय को चमत्कृत व आल्हादित करता है। अतः श्रव्य काव्य की अपेक्षा दृश्य काव्य अधिक जन प्रिय होता है। इसीलिए कहा गया है–**"काव्येषु नाटकं रम्यं"** ।

सर्वप्रथम भरतमुनि(द्वितीय शताब्दी ईसा.पू.) ने अपने आकर ग्रन्थ नाट्य शास्त्र में छत्तीस अध्यायों में नाट्यशास्त्र का प्रामाणिक और विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया हैं।

भरतमुनि ने इसे सार्ववर्णिक वेद कहा है। उनके अनुसार विश्व का कोई भी ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग(प्रयोग) और कर्म नहीं है जिसका समावेश नाट्य में न होता हो–

"न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्म नाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते"।।

यह एक ऐसा साधन है जो दुःखी, आर्त तथा श्रान्त लोगों का मनोरंजन करता है–

दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्ति जननं काले नाट्यमेतन्मया कृतम्।।(नाट्शास्त्र1:114)

इन सब कारणों से ही नाट्य को कवित्व की चरम सीमा – **'नाटकान्तं कवित्वम्'**

इसमें जीवन की सभी घटनाओं का चित्रण रहता है जैसे– धर्म, मनोरंजन, हास्य, युद्ध, श्रृंगार, श्रम आदि प्रत्येक दर्शन अपने भावना के अनुरूप फल प्राप्त करता है। यह छोटे से लेकर बडे तक सभी के लिए हितोपदेशक मनोरंजक और सुखप्रद है।

संस्कृत नाट्योत्पन्ति के बारे में भारतीय परम्परा दैवी उत्पति स्वीकार करती है। भारतीय परम्परा के अनुसार नाट्य वेद की सृष्टि ब्रह्मा ने की तथा उसका भू–लोक पर प्रचार भरत मुनि ने किया। भरत मुनि अपने नाट्यशास्त्र के प्रारम्भ में लिखा है कि त्रेतायुग में देवता ब्रह्मा के पास गये और उनसे उन्हें मनोरंजन का कोई साधन प्रदान करने की प्रार्थना की । तब ब्रह्मा जी ने ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से संगीत, यर्जुवेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस के तत्व लेकर पंचम वेद नाट्यवेद की रचना कीं।

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्योगीतमेव च,
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि। (नाट्य शास्त्र)
वेदोपवेदःसम्बद्वो नाट्यवेदो महात्मना।
एवं भगवता सृष्टो ब्रह्मणा सर्ववेदिना।।
तथा–तस्मात्सृजापरं वेदं पंचमं सार्ववार्णिकम। (नाट्य शास्त्र 1:12)

परन्तु पाश्चात्य विद्वान, नाट्य उत्पत्ति के सम्बन्ध में समाज एवं प्रकृति के परिवर्तनों के आधार पर भिन्न–भिन्न सिद्धान्त मानते है। सिल्वॉ लेवी, प्रा.फॉन श्रोएदर और डॉ. हर्टल ऋक् संवाद–सूक्तवाद से, प्रो. रिजवे वीरपूजा से डॉ. पिशेल भारतीय नाटकों में 'सूत्रधार' शब्द के प्रयोग के आधार पर उसका अर्थ डोरी पकड़ कर 'पुत्तली नचाने व्यक्ति' समझते हुए पुत्तलिका नृत्य से, प्रो. हिलब्राण्ड़ और स्टेकोनों लोकप्रिय स्वांगों से, डॉ. ल्यूडर्स, डॉ. कोनों आदि छाया नाटको से, प्रो. वेबर और प्रो. विन्डिश यूनान से मानते है।

नाट्य कला का विकास वैदिक युग, रामायण, महाभारत, पाणिनी, पतंजलि, वात्सायन के काल–क्रम से गुजरता हुआ भास कालिदास व भवभूति के समय चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया।

प्रायः सभी नाटकों के कथानक, पौराणिक, ऐतिहासिक तथा कुछ कल्पित भी है। इसी प्रकार इन नाटकों के नायक भी इतिहास प्रसिद्ध है। नाटकों की कथावस्तु में विभिन्न महापुरूषों, राजाओं और दैवी शक्तियों का चित्रण है। जो समाज के आदर्श पुरूष है। उनका सजीव, रोचक और सरस वर्णन है।

महाकवि दिङ्नाग का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

भारतीय विद्वान् लेखकों, कवियों तथा नाटककारों में यह विशेषता है कि वे अपनी कृतियों में कहीं पर भी अपना कोई परिचय, समय आदि का उल्लेख नहीं करते। दिङ्नाग भी ऐसे ही महाकवि है जिन्होनें नाटक की प्रस्तावना में अपने नाम का तो उल्लेख कर दिया है,परन्तु अन्य समय आदि का कहीं पर भी उल्लेख नहीं किया है। उन्होंने प्रस्तावना में अपने को अरारालपुर निवासी और नाम दिङ्नाग लिखकर आगे कुछ नहीं लिखा। फिर भी अनेक प्रमाणों के आधार एवं विद्वानों के अनुसार दिङ्नाग का समय 10 वीं सदीं के लगभग हैं।

दिङ्नाग ने अपने किसी आश्रयदाता के नाम का उल्लेख नहीं किया है। उनकी अपनी एकमात्र रचना 'कुन्दमाला' ही है। उनकी अन्य किसी रचना का उल्लेख नहीं मिलता है।

कुन्दमाला की कथावस्तु व उसका वृहद् परिचय

कुन्दमाला–छः अंको के इस नाटक में राम के द्वारा सीता के परित्याग से लेकर राम सीता मिलन तक की घटना का वर्णन है। गोमती नदी के तट पर घूमते हुए राम–लक्ष्मण ने जल में बहती हुई कुन्द के फूलों की माला को देखकर सीता का पता लगाया, अतः नाटक का नाम कुन्दमाला है।

कुन्दमाला की कथावस्तु का आधार भवभूति कृत उत्तर रामचरित है। वैसे भवभूति प्रणीत उत्तररामचरित की वस्तु का आधार वाल्मीकीय रामायण का उत्तर खण्ड़ है। इसलिए कुन्दमाला की वस्तु का आधार भी वाल्मीकीय रामायण ही होगा परन्तु कुन्दमाला के कथानकं का सूक्ष्म अवलोकन करने से विदित होता है कि इस नाटक की वस्तु का आधार भवभूति कृत उत्तररामचरित ही है।

प्रस्तुत नाटक के नायक राम है जो कि धीरोदात्त कोटि के नायक है। वे असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे। धीरोदात्त नायक धीर, वीर, गम्भीर होने के साथ ही आत्म प्रशंसा रहित, अहंकार शून्य व दृढ़व्रत होता है। कुन्दमाला नाटक के नायक राम में ये सभी गुण विद्यमान थे। अतः वे धीरोदात्त कोटि के नायक है।

प्रस्तुत नाटकों में करूण रस की प्रधानता है, जो नाटक के प्रारम्भ से अन्त तक प्रवाहित रहता है। अन्य रसों का अभाव सा प्रतीत होता है।

प्रस्तुत नाटक का नाट्यशास्त्रीय अध्ययन

'कुन्दमाला' नाटक नाट्यशास्त्र के नियमों में सटीक ठहरता है। इस नाटक की कथावस्तु ऐतिहासिक है। पाँच सन्धियों से युक्त है। विलास ऋद्धि आदि गुण विद्यमान है। अनेक प्रकार की सम्पत्तियों का वर्णन है। सुख–दुःख की अनुभूति होती है। सम्पूर्ण नाटक में करूण रस का परिपाक है जो कि इस नाटक का अंगीरस है। नाटक में नाट्य शास्त्र के नियमानुसार पाँच से लेकर दश अंक होने चाहिए कुन्दमाला में 6 अंक है। प्रख्यात कुलोत्पन्न वीर धीरोदात्त गुण वाले राम इस नाटक के नायक है। सीता इस नाटक की नायिका है वह स्वीकाया नायिका है जो कि आदर्श चरित्रवती एवं आदर्श पत्नी है।

प्रस्तुत नाटक में सूत्रधार के द्वारा नान्दी पाठ किया गया है। प्रस्तावना, प्रयोगातिशय, नेपथ्य का भी पालन किया गया है। दो अंको की कथा में सम्बन्ध जोड़ने के लिए प्रवेशक व विष्कम्श्राक की रचना की गई है। प्रस्तुत नाटक में सूत्रधार की पत्नी नटी भी है। आत्मगतम्– प्रकाशम् अपवारितम् जनान्तिकम् भरत वाक्य (विदुषक) कञ्चुकी आदि सभी नाट्यशास्त्रीय नियमों से आबद्ध है। कुन्दमाला में आकाशभाषित नहीं है।

नाटक की अन्य माध्यमों से तुलना

संस्कृत नाटकों के अनेक माध्यम है यथा – संवाद परक, कथावस्तु परक। हिन्दी साहित्य में अनेक एकांकी एवं उससे अधिक अंको वाले नाटक लिखे गये। अंग्रेजी सहित्य के नाटककारों में प्रमुख रूप से शेक्सपीयर का नाम बड़ें सम्मान से लिया जाता है। अंग्रेजी साहित्य के वे महान् नाटककार है।

***व्याख्याता**
संस्कृत विभाग
स्व. राजेश पायलट
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बाँदीकुई (दौसा)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नाट्यशास्त्र – भरत मुनि
2. अभिनव नाट्यशास्त्र, पं. सीताराम चतुर्वेदी
3. कवि और काव्य – पं. बलदेव उपाध्याय
4. नाट्य संस्कृति – सुधा – डॉ. रमेश चन्द्र शुक्ल, 1968
5. दशरूपक – धनञ्जय, अनु. डॉ. भोला शंकर व्यास, 1967
6. नाट्यशास्त्र(भाग1–4) – भरतमुनि अभिनव गुप्ताचार्य, टीका सहित, 1934
7. भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा और दशरूपक – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, 1963
8. संस्कृत सहित्य का इतिहास – पं. बलदेव उपाध्याय
9. संस्कृत का भाषा का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ. भोलाराम व्यास
10. संस्कृत साहित्यशास्त्र और काव्यांलंकार – डॉ. भोलाराम व्यास
11. संस्कृत नाटकः मूल लेखक डॉ. कीथ, डॉ. उदयभान सिंह, 1965
12. संस्कृत नाटक समीक्षा – प्रो. इन्द्रपाल सिंह "इन्द्र", 1960
13. संस्कृत साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल
14. संस्कृत नाट्य साहित्य –डॉ. जय किशन प्रसाद, 1969
15. संस्कृत नाटककार – कान्तिकिशोर भरतिया, 1959
16. सस्कृत नाट्यशास्त्र, एक पुनर्विचार जयकुमार 'जलज' 1962
17. संस्कृत सहित्य का इतिहास – वी. वरदाचार्य, अनु. डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, 1962
18. संस्कृत सुकवि समीक्षा– पं. बलदेव उपाध्याय
19. संस्कृत सहित्य का प्रमाणिक इतिहास– डॉ रमाशंकर त्रिपाठी
20. संस्कृत सहित्य का इतिहास(भाग–1)– डॉ. मैकडानल, अनु. चारू चन्द्र शास्त्री, 1962
21. कुन्दमाला – दिङ्नाग
22. संस्कृत साहित्य विमर्श– पं. द्विजेन्द्र नाथ
23. संस्कृत सहित्य का नवीन इतिहास– कृष्ण चैतन्य अनु. विनय कुमार राय
24. साहित्य दर्पण – विश्वनाथ कविराज, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, 1931
25. दास इण्डिया ड्रामा – डॉ. स्टेन कीनो